पहली इकाई

१. भारत महिमा

– जयशंकर प्रसाद

हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार ।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक ।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत । ......

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम ।

'यवन' को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि ।

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं ।......

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न ।

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव ।

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान ।

जिएँ तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष ।

— ० —

परिचय

जन्म : १८९०, वाराणसी (उ.प्र.)
मृत्यु : १९३७, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : जयशंकर प्रसाद जी छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। आपकी रचनाओं में सर्वत्र भारत के गौरवशाली अतीत, ऐतिहासिक विरासत के दर्शन होते हैं।
प्रमुख कृतियाँ : 'झरना', 'आँसू', 'लहर' (काव्य), 'कामायनी' (महाकाव्य), 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' (ऐतिहासिक नाटक), 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल' (कहानी संग्रह), 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' (उपन्यास) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत कविता में कवि ने अपने देश के गौरवशाली अतीत का सजीव वर्णन किया है । कवि का कहना है कि हमें अपने देश पर गर्व करते हुए उसके प्रति अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए ।

शब्द संसार

उपहार पुं. सं.(सं.) = भेंट
हीरक हार पुं. सं.(सं.) = हीरों का हार
आलोक पुं.सं.(सं.) = प्रकाश
व्योम पुं. सं.(सं.)= आकाश
तम पुं.सं.(सं.) = अँधेरा
संसृति स्त्री.सं.(सं.) = संसार
विपन्न वि.(सं.) = निर्धन
टेव स्त्री.सं.(हिं.) = आदत
यवन पुं. सं.(सं.) = यूनानी

मुहावरा

निछावर करना = अर्पण करना, समर्पित करना

स्वाध्याय

✻ **सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) निम्नलिखित पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए :

१. कहीं से हम आए थे नहीं ⟶ ....

२. वही हम दिव्य आर्य संतान ⟶....................................

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

संचय
सत्य
अतिथि
रत्न
वचन
दान
हृदय
तेज
देव

	अ	आ
१	------------	------------
२	------------	------------
३	------------	------------
४	------------	------------

(३) लिखिए :

१. कविता में प्रयुक्त दो धातुओं के नाम :

२. भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ :

(४) प्रस्तुत कविता की अपनी पसंदीदा किन्हीं दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

(५) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंदीदा होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश

BHF8KR